कृष्णा सोबती : जन्मशती

ISSN 2394-1723
मूल्य : 40 रुपये

वागर्थ

वर्ष 31 अंक 361 दिसंबर–2025

उत्तर आधुनिकता : युग और युगांत

सुधीश पचौरी हरीश त्रिवेदी अजय तिवारी
अच्युतानंद मिश्र अमल सिंह भिक्षुक
(प्रस्तुति : मधु सिंह)

कहानियां

सुभाष चंद्र कुशवाहा पूनम सिंह धनंजय चोपड़ा
वर्षा अडालजा (गुजराती) पृथ्वीराज तौर (मराठी)

भारतीय भाषा परिषद

ISSN : 2394-1723

वागर्थ

भारतीय भाषा परिषद की मासिक पत्रिका

वर्ष 31, अंक 361, दिसंबर 2025

संपादक
शंभुनाथ

प्रबंध संपादक
प्रदीप चोपड़ा

प्रकाशक
डॉ. कुसुम खेमानी

संपादन सहयोग
अंक सज्जा
सुशील कान्ति

ऑनलाइन मल्टीमीडिया संपादक
उपमा ऋचा
upmamcreat@gmail.com

संपादकीय विभाग
36 ए, शेक्सपियर सरणी
कोलकाता–700017
vagarth.hindi@gmail.com
7449503734
(दिन 12 बजे से संध्या 6 बजे)

आवरण
तारक नाथ राय

इस अंक में

आधुनिक पुनर्जागरण की प्रस्तावना : **संपादकीय** 5

कहानियां

तुम्हारी मां जैसी : **सुभाष चंद्र कुशवाहा** 13
रेत का टीला : **पूनम सिंह** 21
एक कप कॉफी और बारिश की बूंदें : **धनंजय चोपड़ा** 29
पलायन (गुजराती) : **वर्षा अडालजा**
(अनुवाद : **रजनीकांत एस शाह**) 34
कल्पनातीत सत्यकथा (मराठी) : **पृथ्वीराज तौर**
(अनुवाद : **सुनील बाबुराव कुलकर्णी**) 43

कविताएं

पंकज कुमार/ज्ञान प्रकाश विवेक/मनीष कुमार मिश्रा/दिविक रमेश/सवित्री बड़ाईक/अनुराधा ओस/दिव्या श्री/सौरभ राय 46
ओड़िया कविताएं : **जयद्रथ सुना**/असमियां कविताएं : **रुमी लस्कर ब'रा**/तेलुगु कविताएं : **मर्सी मारग्रेट बोड़ा** 59

परिचर्चा

उत्तर–आधुनिकता : युग और युगांत : **सुधीश पचौरी/हरीश त्रिवेदी/अजय तिवारी/अच्युतानंद मिश्र/अमल सिंह 'भिक्षुक'** (प्रस्तुति : **मधु सिंह**) 66

लेख

इतिहासकार अपने दरवाजे से किसी भी तथ्य को लौटा नहीं सकता : **हितेंद्र पटेल** 87

जन्मशती स्मरण

कृष्णा सोबती के लेखन में विभाजन का दर्द :
श्रद्धांजलि सिंह 92

विश्वदृष्टि

हस्का का निर्णय (अफगानी कहानी) : **राना जुरमाती**
(हिंदी अनुवाद : **बालकृष्ण काबरा 'ऐतेश'**) 97

समीक्षा संवाद

संस्मरण का सौंदर्य : **मृत्युंजय श्रीवास्तव** (रामचंद्र गुहा और अरुंधती राय की पुस्तकें) 105

सोशल मीडिया 111

विविध

पाठक संसद/किताबें 114

लघुकथा

अन्य की चिंता : **पूनम पांडे** 33

बतरस

साहित्य : विरासत और समीचीनता : **कुसुम खेमानी** 118

देश-देशांतर

मर्सी मार्गरेट बोड़ा (तेलुगु)/ **सफिया एल्हिलो** (अफ्रीकी)

मल्टी मीडिया

रघुवीर सहाय की कविता '**मेरा जीवन**' का चित्रपाठ : वाचन : **सूर्यदेव राय**

कविताओं में रेखांकन :
नेट से साभार

वागर्थ सदस्यता और बिक्री संपर्क

एक प्रति : 40/-
सामान्य वार्षिक सदस्यता (डाक व्यय सहित) : 450 रुपये
वार्षिक सदस्यता (रजिस्टर्ड डाक) 450+510 = 960 रुपये
त्रैवार्षिक सदस्यता : 1350 रु.। रजिस्टर्ड डाक से = 2900/-
आजीवन : 10,000 रुपये/**(साधारण डाक)** विदेश : **वार्षिक** : 80 डॉलर
भारतीय भाषा परिषद के नाम से चेक या ड्राफ्ट भेजें
एजेंसियों और सदस्यों द्वारा चेक से भुगतान Bharatiya Bhasha Parishad के नाम या Neft द्वारा : Kotak Mahindra Bank, Branch : Loudon Street, A/c no. 8111974982, IFSC Code KKBK0006590 पर भुगतान करें।
भुगतान के बाद एस एम एस या व्हट्सअप कर दें 8910269814 : **मीनाक्षी दत्ता**
जानकारी : कार्यालय के दिन दोपहर 12 बजे से संध्या 6 बजे तक
समय पर भुगतान करने वाली एजेंसियों को ही हम भविष्य में पत्रिका भेज पाते हैं।

● प्रकाशित रचनाओं से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
© सर्वाधिकार सुरक्षित
● वागर्थ से संबंधित सभी विवाद कोलकाता न्यायालय के अधीन होगा।

● वेबसाइट : **www.bharatiyabhashaparishad.org**

वागर्थ प्रबंध प्रभार : **मीनाक्षी दत्ता**
वितरण तथा अन्य कार्य : **अशोक बारीक, बैद्यनाथ कामती, खेत्राबासी बारीक, संतोष सिंह, प्रदीप नायक, प्रेम नायक**

आप **क्यू आर कोड** स्कैन करके भी **भारतीय भाषा परिषद** के नाम भुगतान कर सकते हैं। भुगतान करने के बाद मोबाइल नंबर सहित संपूर्ण विवरण भेज दें।

संपादकीय

आधुनिक पुनर्जागरण की प्रस्तावना

आज के उत्तर-आधुनिक परिदृश्य में क्या यह माना जाए कि आधुनिकता एक निष्फल परियोजना थी और आधुनिक मूल्य निरर्थक थे। 20वीं सदी में दुनिया का कोई समाज पूरी तरह आधुनिक नहीं हो पाया। आज भी हमारे देश में नस्ल, प्रांत, धर्म, जेंडर, जाति, पुराजातीयता आदि के आधार पर भेदभाव और हिंसा मौजूद है, बल्कि कई जगहों पर बढ़ी है। आज भी व्यक्ति का विवेक पर्याप्त उन्नत नहीं हो पाया है। हम ऐसे युग में जी रहे हैं, जब लोकतंत्र के दो बड़े सांस्कृतिक स्तंभ- तर्क और नैतिकता रसातल में हैं।

क्या उत्तर-आधुनिकता एक सांस्कृतिक दिवालियापन है

मुक्तिबोध ने 'एक साहित्यिक की डायरी' में लिखा है, 'यदि यह आधुनिक भावबोध ऊँचा उठाया न जा सका और इसके द्वारा व्यक्तिगत और सार्वजनिक कार्यानुशासन न हो सका तो क्या होगा? खंडनकर्ता खंडित हो जाएगा। मूर्ति-भंजक की स्व-मूर्ति का सिर काट लिया जाएगा।'

खंडनकर्ता कौन है? सामंती रूढ़ियों और एक हद तक उपनिवेशवाद की खंडनकर्ता आधुनिकता है। आधुनिकता मूर्ति-भंजक है। वह 19वीं सदी से ही भारतीय जीवन में उथलपुथल मचाती आ रही थी। वह सदियों की अज्ञानता, सती प्रथा जैसी कुप्रथाओं, जाति व्यवस्था, लैंगिक भेदभाव, अंधविश्वास, अशिक्षा जैसी बुराइयों को चुनौती दे रही थी। वह मानवता, लौकिकता और स्वतंत्रता की बात करती थी।

मुक्तिबोध अपने समय में लक्षित कर रहे थे कि आधुनिकता के आदर्शों को पुराने-नए खलनायक बिगाड़ रहे हैं। आधुनिकता का अर्थ होता जा रहा है नया फैशन, अधिकाधिक सुख और सौंदर्यवाद। आधुनिकीकरण में